जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त

(Cognitive development Theory of Jean Piaget)

डा0 जितेन्द्र सिंह गोयल

असिस्टेंट प्रोफेसर

शिक्षा विभाग

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ (उ0प्र0)

स्व–घोषणा

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ावा देने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है। इसका आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए उपयोग पूर्णतः प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका उपयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए करेंगे। इस ई–कंटेंट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

(डॉ0 जितेन्द्र सिंह गोयल)
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ (उ0प्र0)

सबसे पहले जानने की कोशिश करते है कि संज्ञान किसे कहते हैं? :-

जीन पियाजे (1896-1980)

संज्ञान :-

संज्ञान विचार, अनुभव और ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने और चीजों को समझने की मानसिक प्रक्रिया है। इसके माध्यम से हमारे मन में विचार पैदा होते हैं और किसी चीज़ के बारे में पूर्वानुमान भी लगा पाते हैं। ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से हम वाहय जगत को जानने समझने की जो कोशिश करते हैं उसे संज्ञान कहते हैं। संज्ञान का अर्थ हैं जानना।

अर्थात कर्म व भाषा के माध्यम से स्वयं और दुनिया को समझना। इसके अनुसार व्यक्ति अपने वातावरण एवं परिवेश के साथ मानसिक शक्तियों का प्रयोग करते हुए सीखता है। इसके जन्मदाता स्विटजरलैंड के मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे माने जाते हैं। ।जीन पियाजे ने 1923 में अपनी पुस्तक ‘‘द लैंग्वेज एंड थॉट ऑफ़ द चाइल्ड’’ लिखी ।

जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त :- जीन पियाजे ने अपने बच्चों लारेन्ट, ल्युसीन, जेक्लीन पर प्रयोग किया

जीन पियाजे के अनुसार बौद्धिक विकास की अवस्थाये :

संवेदी पेशीय अवस्था (Sensory-Motor Stage)

(जन्म से 2 वर्ष तक)

पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (Pre-Operational Stage)

(2 से 7 वर्ष तक)

मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (Concrete – Operational Stage)

(7 से 12 वर्ष तक)

औपचारिक-संक्रियात्मक अवस्था (Formal-Operational Stage)

(12 से 15 वर्ष तक)

संवेदी पेशीय अवस्था/इन्द्रिय जनित अवस्था (Sensory-Motor Stage) (जन्म से 2 वर्ष तक)

- इस अवस्था में शिशु अपनी संवेदनाओं तथा शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से सीखता हैं।
- वह वस्तुओं को देखकर सुनकर, स्पर्श करके गन्ध के द्वारा तथा स्वाद के माध्यम् से ज्ञान ग्रहण करता हैं।
- वातावरण से स्वयं को अलग समझना, अनुकरण करना।
- शिशु स्वार्थी व आत्मकेन्द्रित होता है।
- वस्तु स्थायित्व **(Object Permanence)** के गुण का विकास (20 से 24 महीने के मध्य)

पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2–7 वर्ष तक) (Pre-Operational Stage) :–

- बालक में भाषा का विकास प्रतीकों के माध्यम से होता है। शिशु दूसरों के सम्पर्क से, खिलौनों से व अनुकरण के माध्यम से ज्ञान ग्रहण करता हैं।
- बालक अभिनय करता है एवं स्वयं से बातें करता है।
- वह अक्षर लिखना, गिनती गिनना, रंगो को पहचानना, वस्तुओं को क्रम में रखना, हल्की भारी वस्तु का ज्ञान होना, माता-पिता की आज्ञा मानना, पूछने पर नाम बताना और घर के छोटे-छोटे कार्यो में भाग लेना आदि कार्य करता हैं।
- सजीववाद – हर वस्तु को सजीव समझना
- अहं भाव
- अनपलटन
- इस अवस्था में बालक तार्किक चिन्तन करने योग्य नही होता इसीलिए इसे अतार्किक चिन्तन की अवस्था कहते हैं।

मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (Concrete – Operational Stage) (7-12 वर्ष तक) :-

- मूर्त रूप से तर्क करना।
- विचारों में क्रमबद्धता एवं जटिलता आ जाती है।
- पलटन का गुण पाया जाता है।
- वस्तुओं में वर्गीकरण करने, सम्बन्ध स्थापित करने, पहचानने तथा तुलना स्थापित करने की शक्ति का विकास।
- इस अवस्था में चिन्तन की शुरूआत हो जाती है। लेकिन उसका चिन्तन केवल मूर्त (प्रत्यक्ष) वस्तुओं तक ही सीमित रहता हैं। इसीलिए इसे मूर्त चिन्तन की अवस्था के नाम से जाना जाता हैं। इस अवस्था में बालक दो वस्तुओं के बीच अन्तर करना, तुलना करना, समानता व असमानता बताना सही व गलत में भेद करना आदि सीख जाता हैं।
- इस अवस्था में बालक दिन तारीख, महीना, वर्ष व दिशाओं आदि बताने में योग्य हो जाता है।

औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (Formal-Operational Stage) (12 वर्ष के बाद) :-

- अमूर्त चिन्तन एवं अपसारी चिन्तन पाया जाता है।
- निगमन तर्क का विकास।
- समस्या समाधान तथा निर्णय करने की शक्ति का विकास।
- इस अवस्था में सभी मानसिक योग्यताओं (चिन्तन करना, कल्पना करना, निरीक्षण करना, समस्या-समाधान) का विकास हो जाता है।

सन्दर्भ :-

बिहारी, आर. एल., एवं मानव, आर. एन., (२००४-०५). *शिक्षा मनोविज्ञान.* मेरठ : रस्तोगी पब्लिकेशन.

गुप्ता, एस. पी. (२००७). *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान.* इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन.

धन्यवाद